मधुबन ओम् शान्ति अंक 314 सितम्बर 2018

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(16-08-18)

परमपवित्र परमप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा परमात्म छत्रछाया में रहने वाले, एक बाबा दूसरा न कोई, इस महामन्त्र की पक्की राखी बांध, पवित्रता के बल से स्वर्णिम दुनिया बनाने वाली निमित्त बनी हुई हमारी सभी टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - अभी तो चारों ओर रक्षाबंधन की धूम है, सब तरफ बहुत अच्छी सेवायें हो रही हैं। संगम का यह यादगार पर्व भी कितना प्यारा, कितना न्यारा है। एक ओर यह बहन भाई के स्नेह का प्रतीक है, दूसरी ओर ईश्वरीय नियम मर्यादाओं को दृढ़ता से पालन करने की प्रतिज्ञा का बंधन है। ऐसा बंधन जो सदा के लिए देह और दुनिया के सब बंधनों से मुक्त कर देता है। राखी के बाद फिर आता है सर्व के लाडले श्रीकृष्ण के जन्म दिन की यादगार जन्माष्टमी का पावन पर्व। जो सभी भक्त कितनी श्रधा भावना के साथ मनाते हैं। हम सभी तो इन उत्सवों को अलौकिक रीति से मनाते सदा उमंग-उत्साह में रहते हैं। देखो, भारत में 15 अगस्त को भी कितना धूमधाम से **"स्वतन्त्रता दिवस"** के रूप में मनाते हैं। अब देश तो हमारा स्वतन्त्र हुआ लेकिन आत्मायें विकारों और व्यसनों के अधीन हैं। अब इनसे सबको स्वतन्त्र करना है। उसमें भी पहले अपने सूक्ष्म रोब के संस्कारों का त्याग कर रुहानी रूहाब में रह बहुत-बहुत नम्रचित बनना है। यही सच्ची-सच्ची स्वतन्त्रता है।

मीठा बाबा हम बच्चों को ऐसी अनेकानेक मीठी-मीठी शिक्षाओं से सजाता है। बाबा कहे बच्चे कभी कोई भी बात में क्या करूं, कैसे करूं, यह नहीं कहो क्योंकि तुम समर्थ बाप के बच्चे हो। तुम्हें विकर्माजीत बनना ही है। संगमयुग है, भाग्यविधाता बाबा साथ है इसलिए सदा शान्त और सदा खुशराज़ी रहो। कभी भी न स्वयं, स्वयं से नाराज़ होना, न दूसरों से नाराज़ होना और न किसी को नाराज़ करना। आपस में सदा रुहानी स्नेह भरी लेन-देन करते सुख, शान्ति, प्रेम, आनन्द में मस्त रहना। पवित्रता, सत्यता, गम्भीरता, नम्रता और मधुरता... यह विशेष पांच गुण और 8 शक्तियां जीवन में धारण करेंगे तो यही हमारी रक्षा करेंगे। लेकिन अगर कोई इच्छा, ममता है, मांगने के संस्कार हैं तो वह बाबा के दिलपसन्द नहीं हैं। बाबा के दिल में बैठना, बाबा के दिल को अपना तख्त बनाना इसके लिए सिर्फ सच्चा रहना है। तो बोलो, हमारे मीठे भाई बहिनें सदा दिलवाला के दिलतख्त पर रहते हो ना! उसे ही अपनी दिल में बिठाया है ना! अब तो बाप समान लाइट और माइट सम्पन्न बनना है। हर एक के चेहरे से प्युरिटी की पर्सनैलिटी और रीयल्टी की रॉयल्टी दिखाई दे। मन्सा में भी स्वयं प्रति या किसी के प्रति व्यर्थ रूपी अपवित्र संकल्प भी न चले। किसी की कमजोरी वा अवगुण रूपी अपवित्रता का संकल्प भी धारण नहीं करना है तब कहेंगे सच्चा वैष्णव। मैं तो कई बार बाबा से ऐसी बहुत गुप्त बातें करती हूँ और तो किससे कर भी नहीं सकती क्योंकि वो कैच नहीं कर सकेंगे। बाकी तो ड्रामा की हर सीन में बहुत गहरे राज़ भरे हुए हैं, उन राज़ों को जानते, सदा अचल अडोल एकरस स्थिति में रहना है। अच्छा!

सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"निर्मान बन अपने श्रेष्ठ स्वमान की सीट पर सेट रहो"

1) सन्तुष्टता सदा स्वमान की सीट पर सेट रहने का साधन है। स्वमान के साथ निर्मान भाव का भी बैलेन्स हो। यह बैलेन्स सदा ही सहज सफलता स्वरुप बना देता है। स्वमान भी जरुरी है लेकिन यदि स्वमान और निर्मान दोनों का बैलेन्स नहीं है तो स्वमान, देह-अभिमान में बदल जाता है।

2) स्वमान अर्थात् स्व-आत्मा का मान। अभिमान की सीट छोड़ स्वमान की सीट पर स्थित हो जाओ क्योंकि अभिमान की सीट ऊपर से बड़ी सजी-सजाई है, देखने में आरामपसन्द, दिलपसन्द है लेकिन अन्दर कांटों की सीट है और स्वमान की सीट सदा सुखी, सदा श्रेष्ठ, सदा सर्व प्राप्ति स्वरूप का अनुभव कराने वाली है।

3) अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित रह किसी भी आत्मा को सम्मान देना अर्थात् उस आत्मा को उमंग-उल्लास में लाकर आगे करना है। जैसे अल्पकाल का पुण्य, अल्पकाल की वस्तु देने वा सहयोग देने से होता है। ऐसे सदाकाल का उमंग-उत्साह अर्थात् खुशी का खज़ाना वा स्वयं का सहयोग देने से यह बड़े ते बड़ा पुण्य हो जाता है।

4) सबसे श्रेष्ठ स्वमान है स्वयं को मास्टर सर्वशक्तिमान की स्मृति में रखना। जैसे कोई बड़ा ऑफिसर वा राजा होता है, जब वह स्वमान की सीट पर स्थित होता है तो दूसरे भी उसे सम्मान देते हैं। ऐसे ही आप अपने इस श्रेष्ठ स्वमान की सीट पर रहो तो माया भी आपके आगे सरेन्डर हो जायेगी लेकिन जितना बड़ा स्वमान उतना ही निर्मान बन सबको सम्मान दो।

5) जितना बापदादा आप बच्चों को श्रेष्ठ भाग्यशाली समझते हैं, उतना स्वयं को समझना - यही श्रेष्ठ स्वमान में स्थित होना है। तो सदा स्वमान में रहो और हर कदम बाप के फरमान पर चलो, सबको सम्मान दो तो हर कदम में सफलता मिलती रहेगी।

6) जो बाप की महिमा है, वही आप बच्चों का स्वमान है। सिर्फ एक महिमा भी स्मृति में रखो तो स्वमान में स्वत: ही स्थित हो जायेंगे। स्वमान में रहने से विघ्न-विनाशक बन जायेंगे और सर्व द्वारा मान मिलता रहेगा। यह अनादि नियम है कि मान मांगने से नहीं मिलता है, लेकिन निर्मान बन सम्मान देने से, स्वमान में स्थित होने से, प्रकृति दासी के समान, स्वमान के अधिकार के रूप में मान प्राप्त होता है।

7) बापदादा बच्चों को स्वयं से भी सर्व श्रेष्ठ ताज, तख्तनशीन परमधाम के चमकते हुए सितारे और विश्व के सर्व आत्माओं के दिल के सहारे, विश्व की आत्माओं के आगे सदा पूर्वज और पूज्य की नज़र से देखते हैं। तो जैसे विश्व के आगे ऊंचा मान है, ऐसा ही स्वमान वा शान सदा कायम रहे – यही बापदादा की हर ब्राह्मण आत्मा में श्रेष्ठ कामना है।

8) आप बच्चे सर्व आत्माओं के आधार मूर्त और उद्धार मूर्त पूर्वज आत्मायें हो। पूर्वज का स्वमान होने के कारण पूर्वजों के स्थान का भी स्वमान है। किसी भी धर्म वाले न जानते हुए भी भारत भूमि अर्थात् पूर्वजों के स्थान को महत्व की नज़र से देखते हैं। साथ-साथ सर्व महान् प्राप्तियों का आधार सहजयोग वा आध्यात्मिक शक्ति की प्राप्ति का केन्द्र भारत को ही मानते हैं। भारत के यादगार गीता शास्त्र को भी सर्व शास्त्रों के श्रेष्ठ स्वमान का शास्त्र मानते हैं।

9) जो बच्चे अपने पूर्वज-पन के श्रेष्ठ स्वमान में स्थित रहते हैं। उन्हें किसी भी प्रकार का अलबेलापन नहीं आ सकता। उनसे कोई साधारण वा व्यर्थ कर्म नहीं होगा। इस श्रेष्ठ पोजीशन में स्थित रहो तो पांच विकार और पांच तत्व आपके आगे दास बन जायेंगे। प्रकृति सतोप्रधान सुखदाई बन जायेगी और पांच विकार विदाई ले लेंगे।

10) "मैं परम पवित्र आत्मा हूँ"- सदा अपने इस स्वमान के आसन पर स्थित होकर हर कर्म करो। तो सहज वरदानी हो जायेंगे, यह सहज आसन है। इस आसन पर रहने से पवित्रता की झलक और फलक स्वत: दिखाई देगी क्योंकि स्वमान के आगे देह-अभिमान आ नहीं सकता।

11) सदा स्मृति रहे कि मैं हर कदम में पुण्य करने वाली पुण्य आत्मा हूँ। महान संकल्प, महान बोल, महान कर्म करने वाली महान आत्मा हूँ। इस स्वमान के आसन पर यदि विराजमान होंगे तो सहज ही मायाजीत, विजयी बन जायेंगे।

12) सदा बड़ों को मान देना, आज्ञाकारी बनना अर्थात् सदाकाल का मान-शान लेना, स्वमान प्राप्त करना। बड़ों ने कहा और किया। ऐसे विशेष सेवाधारी सर्व के और बाप के

प्रिय बन जाते हैं। इसमें झुकना भी पड़ता है लेकिन यह झुकना छोटा बनना नहीं है, सफलता के फल सम्पन्न बनना है।

13) हम इस बेहद ड्रामा में विशेष हीरो पार्टधारी हैं और हीरे जैसा जीवन बनाने वाले हैं - सदा इसी स्वमान में स्थित रहो। वाह ड्रामा और वाह मेरा पार्ट! जैसे बाप हीरो पार्टधारी है तो उनका हर कर्म गाया और पूजा जाता है, ऐसे बाप के साथ जो सहयोगी आत्मायें हैं उन्हों का भी हीरो पार्ट होने के कारण हर कर्म गायन और पूजन योग्य हो जाता है।

14) सदा इस स्वमान में स्थित रहो कि हम अल्लाह के बगीचे के पुष्प बन गये - इससे बड़ा स्वमान और कोई हो नहीं सकता। "वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य" - यही गीत गाते रहो। भोलानाथ से सौदा कर लिया और तीनों लोक ही सौदे में ले लिए। आज की दुनिया में सबसे बड़े ते बड़ा कोई भी धनवान हो लेकिन इतना बड़ा सौदा कोई नहीं कर सकता, इतनी महान आत्मायें हो - इस महानता को स्मृति में रखकर चलो।

15) हम ब्राह्मण आत्मायें विशेष में भी विशेष और विशेष में भी विशेष हैं। इतना अपना स्वमान सदा स्मृति में रखते हुए संकल्प, बोल और कर्म में आओ। सदा यही याद रखो कि हम बापदादा के नयनों के नूर हैं, मस्तक की मणि हैं, गले के विजय माला के मणके हैं और बाप के होठों की मुस्कान हैं।

16) सदा इस स्वमान में रहो कि मैं बापदादा के गले की माला का विजयी अमूल्य रत्न हूँ। जो बच्चे बापदादा को फालो फादर करने वाले आज्ञाकारी, वफ़ादार, फरमानबरदार हैं वही सच्चे-सच्चे अमूल्य रत्न हैं।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 15-10-14 *मधुबन*

"चारों सब्जेक्ट में फुल मार्क्स लेनी हैं तो दो शब्द याद रखो - फारगिव एण्ड फारगेट"

(दादी जानकी)

सब एक दो को देखके खुश हो गये, मैं आपको देख खुश, इनको देख खुश, हम भी खुश, ऐसे सब खुश हैं ना। सर्व गुण सम्पन्न बनना है तो खुश रहना है, कुछ भी हो जाए...। उसके लिए क्या भी है कोई बात नहीं, कैसी भी बात को सोचके बड़ा नहीं बनाना है। बड़ी बात छोटी हो जाए।

बाबा के कुछ शब्द ऐसे मीठे हैं, खींचने वाले हैं, जिसके सहारे हमारी जीवन यात्रा सफल हो रही है। हम सब यात्री हैं ना, जा रहे हैं अपने घर में। बाकी थोड़ा है, जम्प लगाके पहुँचना है। पुरानी दुनिया, 5 तत्वों की दुनिया सारी सतोप्रधान बन रही है, हमको सतोगुणी बनना है। उसमें कभी कोई भूले नहीं, फॉरगिव एण्ड फॉरगेट। मेरे से कोई भूल हुई या और किसी से कुछ भूल हुई, भूल जा। सबसे सयाना, सच्चा और अच्छा बनना हो तो भूलों को भूल जाओ, क्योंकि जो मिनट पूरा हुआ फिर कल्प बाद होगा। जो हुआ सो ड्रामा। यह फॉरगिव और फॉरगेट वाला चारों सब्जेक्ट में फुल मार्क्स ले सकता है। कभी याद नहीं करेगा कि कल इसने यह किया था... शान्ति से काम लो माना शक्ति आ गई। बोला, रिपीट किया, यह दो कान इसीलिए नहीं है।

तो यह दो कान भगवान की बात सुनने के लिए हैं, यह दो आँखें हैं बाबा को देखने के लिए। बाबा परमात्मा है। मेरी बहन है या भाई है पर है आत्मा। रूहानी दृष्टि बड़ी राहत देती है, ताकत देती है। और मैं यहाँ आपको सामने देखके खुश हूँ। बाबा ने शक्ति भवन में जो कुटिया दी है, वहाँ कोई कभी कभी दो मिनट के लिए भी बाजू में आके बैठते हैं तो उन्हें अपनेपन की फीलिंग आ जाती है। बाबा ने अपना तो बनाया पर फीलिंग भी अपनेपन की हो। अभी सारी सभा को देखो कितना अपनापन लग रहा है, कितना अच्छा लग रहा है। क्लास है या मिलन है, कितना खुशी हो रही है।

जब दिल में खुशी होती है तो वाणी मीठी और मधुर हो जाती है। बाबा की मीठी वाणी ने ही तो सारे यज्ञ का काम किया है। जैसे बाबा मीठे मीठे शब्दों में सुनाता था, वही और वैसे ही हम सबने सुनाया है तब तो इतने सेन्टर खुले हैं। कभी भी किसी के लिये कोई कमी-कमजोरी हमारे मन चित्त में न हो, यह सम्भालना है। अन्त मते सो गते का ख्याल है। तो फॉरगिव एण्ड फॉरगेट यह दो शब्द सभी याद रखना।

अभी यात्रा पूरी हो गई है, फिर कल्प के बाद ऐसे ही

यहाँ बैठेंगे। सेम, कल्प-कल्प, कोई फर्क नहीं होगा। यह खेल है। बाबा ने यह जो कल्प-कल्प की नॉलेज दी है, उससे अतीन्द्रिय सुख पाया है जिससे कर्मेन्द्रियों की चंचलता खत्म यानि शान्त हो गई है। इच्छा मात्रम् अविद्या। मन में कोई ख्याल ही नहीं, क्या करूँ, कैसे करूँ।

जिस घड़ी हम बाबा के पास आई तब से किसके प्रति भी द्वेष भाव नहीं रहा है। कोई के प्रभाव में है तो कहेंगे यह बहुत अच्छा है, झुकाव हो जाता है। अगर दबाव में हैं तो कहेंगे करना पड़ता है, हम तो इससे फ्री हैं। तो मेरे को अपने नाम से भी काम लेने के लिए बाबा ने जनक जनक कह करके गुप्त अन्दर से विदेही रहने का वरदान दे दिया। बाबा की समर्पण लाइफ को देख पहले-पहले शुरू में बाबा को फॉलो करने के लिए जो भी निमित्त बने, समर्पण हुए वो बाबा के रत्न बन गये। हर एक की स्टोरी वन्डरफुल है, पर हम भी पदमापदम भाग्यवान हैं जहाँ कदम रखा है कमाई है क्योंकि पढ़ाई से बहुत प्यार है। लौकिक माँ बाप को खुशी होती है बच्चा अगर अच्छा पढ़ा लिखा है तो। बाबा को भी अच्छा लगता है जो बच्चा पढ़ाई में ध्यान देता है।

ज्ञान की मंजिल कहती है - अकेला हूँ, अकेला जाना है। अकेला समझो तो कभी भी देह तरफ आकर्षण नहीं जा सकती। हम बाबा की गोदी में चले गये, न मैं किसी की गोदी में हूँ, न कोई मेरी गोदी में आ सकता। यह ईश्वरीय लॉ कहता है। हमें तो देह के धर्मों से भी परे जाना है। बुद्धि में एक बाबा है तो सब विकारी वृत्तियां समाप्त हो जाती है। ज्ञान की ढाल को साथ रखो।

आपस में कभी भी खिट-पिट नहीं होनी चाहिए। जब अपने को मालिक समझते तो आँख दिखाते। बाबा ने कहा तुम्हें प्रवृत्ति में प्रेम और शान्ति से रहना है। एक मत हो रहना है। हरेक की बुद्धि अपनी है, हिसाब-किताब अपना है। परन्तु लक्ष्य रखने से लक्षण आ ही जाते हैं। श्रीमत को जज बनाओ। श्रीमत कहती है - एकमत रहना ही है। इसमें कभी-कभी दूसरे की बात को रखना पड़ता... ऐसे नहीं समझो बाबा ने तो कहा है तुम अकेले हो, तुम्हें श्रीमत को ही मानना है। साथी की बात को ठुकरा दो, ऐसा भी एडवान्टेज नहीं लेना है। हरेक को अपना-अपना एक्यूरेट खेल खेलना है। केयरफुल रहो तो चेयरफुल बन जायेंगे। अगर केयरफुल नहीं रहते तो खिट-खिट होती है, इसलिए होश भी रखना होता और फिर उमंग, जोश भी रखना होता। बाबा कहते दोनों का बैलेन्स बनाकर चलो।

कभी भी थोड़ी-थोड़ी बातों में अपना मूड आफ मत करो। ऑफ माना ऑफ। अगर थोड़ी घड़ी के लिए किसी ने कुछ रांग भी बोला, आपने उसे समझा दिया यह रांग है, परन्तु वह नहीं मानता तो उसके कारण तुम अपनी स्थिति खराब क्यों करते! तुम डिस्टर्ब क्यों होते! क्या उस टाइम में आपकी योगयुक्त स्थिति कही जायेगी? फिर दूसरे के पीछे तुम अपना चार्ट क्यों खराब करते? राइट रांग की राय देना आपका कर्तव्य है। बाकी हरेक को चलना तो अपने पांव से है। अपना चार्ट खराब नहीं करो। स्व स्थिति से ही सेवा कर सकेंगे। स्व का चार्ट ठीक रखो। स्व आत्मा को शीतल बनाओ, सर्व शक्तियों को साथ रखो। जब टाइम समाने का हो तो उसे समा दो, जब राइट रांग से उसका सामना करना हो तो सामना करो। समय पर सहन करने की बात हो तो सहन कर लो। ऐसे नहीं मैं क्या करूं - मेरे में तो सहन करने की शक्ति नहीं है। जब नहीं कहा तो नहीं माना योग नहीं। अगर योगयुक्त रहना है तो हर शक्ति को हमेशा अपने साथ रखो। सारा दिन पेपर तो हरेक के सामने आते हैं। जैसे सौभाग्य हमारा बनता वैसे माया उसे तोड़ने के 100 प्रयत्न करती है। परन्तु अपनी स्व स्थिति में, स्वमान में रहो तो उसके लिए हैरान नहीं होना पड़ेगा।

जिसके पास जो भी कड़ा संस्कार हो वह लिखकर बाबा के पास छोड़ दो। जो भी गलतियां होती हैं उन्हें खत्म करो। कोई भी कड़े संस्कार हों, गुस्से का, रूसने का, ईर्ष्या का, रीस करने का तो आज त्याग दो। अलबेलेपन की नींद को तलाक दो। दुनिया में तो ईर्ष्या की बहुत कड़ी बुरी आदत मनुष्यों में रहती है। यह आदत ब्राह्मणों में नहीं होनी चाहिए। परन्तु देखा जाता है ईर्ष्या के वस कई ब्राह्मण दूसरे को आगे बढ़ता देख नहीं सकते। कहेंगे हर बात में फलाने को ही आगे किया जाता! क्या यही सर्विस कर सकता? फिर पैदा हो जाती है जैलसी। लेकिन बाबा कहते हरेक को सेवा करने का हक है, जो ओटे सो अर्जुन। सबको सर्विस में अपनी अंगुली बढ़ानी है। कोई तन से, कोई धन से, कोई मन से... सबको मिलकर करना है। ईर्ष्या नहीं रखनी है। जैसे सर्विस बढ़ती है वैसे ब्राह्मणों में मैं तू पैदा होती है, इसीलिए बाबा ने मंजिल तो सेकण्ड की सरल दी है परन्तु जितनी सरल है उतनी कठिन है। तो अब पुराना चौपड़ा खलास करो। जो हिसाब-किताब हो उसे साफ स्वच्छ बनाकर बाबा की सेवा में लग जाओ। अच्छा।

"जैसे बाबा की दृष्टि महासुखकारी है, ऐसे हमारी दृष्टि वृत्ति हो तो सबका कल्याण हुआ पड़ा है"

मीठे बाबा ने जो हम सबको ज्ञान दिया है, यह सारा ज्ञान हमारे जीवन में सम्पूर्णता लाने के लिए बहुत अच्छी खुराक भी है, खजाना भी है। खुराक है साधारण खाना नहीं है, बहुत पॉवरफुल खज़ाना है। सर्व गुणों में सम्पन्न, 16 कलाओं में सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेंगे? सर्वगुण सम्पन्न तब बनेंगे जब सम्पूर्ण निर्विकारी बनेंगे, कोई इच्छा ममता नहीं है। तो 16 ही कला मेरे में आ जाएं। बाकी सेवायें तो बाबा अपने आप करा रहा है।

अन्दर देखते हैं तो यह बाबा मेरा लगता है, ऐसा मेरा बाबा जो परमपिता परमात्मा सर्व धर्म पिताओं का पिता है, सर्व आत्माओं का पिता है वो मेरा है। और उनसे ऐसी लगन हो जो उसमें और हम बच्चों में कोई अन्तर न हो। मेरी आदि से यह भावना रहती है कि कम खर्च बालानशीन रहें, कोई भी व्यर्थ खर्चा नहीं करना है।

बाबा की जो मुरलियां चलती हैं उसे कम से कम 2-3 बार जरूर पढ़ना चाहिए। यह मुरली (ज्ञान) है, उनसे ही योग लगता है, धारणा पर ध्यान रहता है, ऐसे ही सेवा बाबा ने कराई है। भले चौथा नम्बर सेवा का है पर नम्बरवन सेवा हो गई है, पहले ज्ञान, योग। योग ज्ञान नहीं कहते, योग का ज्ञान है। मैं कौन हूँ, मेरा कौन है? योग का ज्ञान न होता तो योग कैसे लगाती और किससे लगाती!

योग माना कनेक्शन, रिलेशन, कम्यूनिकेशन उसका सिर्फ न ज्ञान है, प्रैक्टिकल है। सुनने वाली आत्मा है, सुनाने वाला परमात्मा है, बनना कैसा है? जब देही-अभिमानी स्थिति होगी। जरा भी देह-अभिमान है तो मुरली काम नहीं करती है। मैं समझती हूँ मुरली से अपनी जीवन यात्रा में कोई भी रूकावट नहीं आई होगी। मानते हो ना! क्योंकि मुरली किसी भी रुकावट को आने नहीं देती है।

हमारा आपस में ईश्वरीय आकर्षण से आवाज़ निकलता है, हम चलें वतन की ओर, खींच रहा है कोई हमको डालके प्रेम की डोर — यह गीत बहुत अच्छा लगता है। मैं नहीं कह रही हूँ, हम कह रही हूँ, हम चले वतन की ओर... खींच रहा है कोई हमको डालके प्रेम की डोर। कैसे जायें? अकेली नहीं जायेंगी, मिलकरके चलेंगे। पुराने जमाने में बाबा मिसाल देता था, जब कोई शादी होती थी तो घोड़े गाड़ी में मिया बीबी सज़े सज़ाये बैठते थे। तो उसके पीछे उनके मित्र सम्बन्धी सगे वाले चलते थे। पीछे बारात होती थी, तो मुझे बारात में नहीं जाना है। मिया बीबी घोड़े गाड़ी में बैठके चलेंगे। तो अभी ऐसे लगता है हम इस रथ में बैठे हैं, रथ सुन्दर है, उसके पीछे पीछे सब फॉलो करके आ रहे हैं, पर बारात में नहीं आना है।

सहज पुरुषार्थ, रॉयल पुरुषार्थ, मेहनत नहीं मोहब्बत का पुरुषार्थ हो तब प्यार है, इज्जत है। बाप बैठा है जिम्मेवार बाप है, पर हम निमित्त भाव से एक्यूरेट और एवररेडी रहें, यह हमारा शान है। जो भी सेवा सामने आयी जिसने भी की, इसने अच्छा नहीं किया, नहीं यह भी टाइम वेस्ट है। अच्छा ही किया। यज्ञ की सेवा, सदा ही अच्छी रही है, गैरंटी है, आगे भी रहेगी। कहाँ से कहाँ पहुँच गये इसलिए सेवा का कोई चिंतन नहीं है। मन शान्त, बुद्धि योगयुक्त होने के कारण अतीन्द्रिय सुख में रहती है। जिस कारण सब सुखी रहते हैं। अगर हमारी बुद्धि अतीन्द्रिय सुख महसूस न करे तो वायुमण्डल इतना अच्छा नहीं बनेगा।

ऐसी भासना आ रही है कि बाबा की दृष्टि में हम हैं, हमारी दृष्टि में बाबा है, ऐसी स्थिति बनाई या बनी तो इन जैसा भाग्यशाली कोई नहीं। मैंने कहा बाबा आप तो भागीरथ हो, हम तो कदम कदम पर आपको फॉलो करते हैं। बाबा आपकी दृष्टि महासुखकारी है। तो हमारी सेवा में भी अभी और कुछ नहीं रहा है, सुनाने वाले बहुत अच्छे अच्छे हैं, सुनने वाले भी अच्छे अच्छे हैं। लेकिन दृष्टि ऐसी हो जो दृष्टि का कनेक्शन है वृत्ति से, वृत्ति का कनेक्शन है मन बुद्धि से। तो वृत्ति दृष्टि कल्याणकारी हो तो सबका कल्याण हुआ ही पड़ा है, क्योंकि विश्व-कल्याणी बाबा है। जो हुआ उसमें कल्याण है। अभी भी जो होगा उसमें कल्याण ही होगा। यह जो बाबा के महावाक्य हैं, ऐसे महावाक्यों को मन्त्र के रूप में या जादू के रूप से ही चला रहे हैं इसलिए कोई और फीलिंग नहीं है। तो मेरी यह भावना है जरा भी हिम्मत से हार नहीं खाना, फीलिंग को नीचे नहीं लेके आना। क्या होगा? कैसे होगा? इस चिंतन के बजाए आपस में अच्छे रहो, तो बस यही सहज पुरुषार्थ है। ओम् शान्ति।

"पांच तत्वों की रौनक कैसी है- प्रकृति माँ है, परमात्मा बाप है तो शक्ति बहुत है"

आत्मा, परमात्मा, प्रकृति पाँच तत्व..... इनका ही खेल चल रहा है। आत्मा तो आत्मा है इतनी छोटी-सी, परमात्मा तो परमात्मा है, भले ऊंच है बहुत। कोई कहते - हू इज गॉड? व्हेर इज़ गॉड? गुलाब के बगीचे में बैठे हैं या कमल के फूलों के बगीचे में बैठे हैं? यह गुलाब के फूलों का बगीचा है ना, खुशबू बहुत अच्छी है। आप गुलाब के बगीचे में जाओ तो एक भी फूल एक जैसे नहीं होंगे, वैराइटी होंगे, परन्तु खुशबू बहुत अच्छी होगी। फिर कमल के फूलों के बगीचे में जाओ तो क्या देखेंगे! सब इकट्ठे हैं, लेकिन खुशबू नहीं है, पर वन्डर है साथ में रहते न्यारे हैं और प्रभु के प्यारे हैं। अभी कहाँ बैठे हैं? गुलाब के बगीचे में या कमल के फूलों के बगीचे में? बताओ।

पाँच तत्वों में प्रकृति माँ है, परमात्मा बाप है। वहाँ (परमधाम घर में) शक्ति बहुत है, यहाँ आई तो पाँच तत्वों की कितनी रौनक है! वन्डर है, एक एक वैराइटी है। अर्जुन को भी जब साक्षात्कार हुआ तो कहा हे भगवन्! तुम्हारा इतना वैराइटी विराट रूप...। तो मुझे हमेशा आता है, पाँच अंगुली बराबर नहीं हैं, परन्तु पाँचों काम की हैं। अंगुलियों में कोई बड़ा, कोई छोटा है पर यह सब मिल करके काम करती हैं तो कितना अच्छा काम होता है। यह भगवान की कमाल है, हमको यूनिटी में लाना। यूनिटी कितनी अच्छी लगती है। अच्छी तरह से वैराइटी गुलदस्ता देख बहुत खुशी हुई। आपको भी खुशी होती है ना। अभी जो करना है करो। इस वैराइटी ड्रामा में अपने दिल, दिमाग, दृष्टि को देखो कितना अच्छा लगता है... सब खुश, मैं खुश, तुम खुश। शुक्रिया बाबा सबको मिलाके एक कर दिया। ओके।

"अपनी नेचर को ऐसा बना लो जो जैसा समय वैसा अपने को मोल्ड कर सको, हर परिस्थिति में स्वयं को एडजेस्ट करने की ताकत हो"

(गुल्जार दादी जी)

आत्मा के निजी संस्कार क्या हैं? ज्ञान स्वरूप, प्रेम स्वरूप, शान्त स्वरूप, पवित्र स्वरूप... यही हैं। और बॉडी कान्सेस के संस्कार किसके जोश के हैं, किसके बहुत टू मच रमणीकता के हैं.. यह सब जो भी संस्कार हैं यह बॉडी कान्सेस के हैं। बाकी वास्तव में आत्मा के संस्कार तो वह हैं।

इस समय आप सब देखते अनुभव करते हो कि अव्यक्त बाबा के अव्यक्त रूप की बहुत बडी लीला जो चल रही है। वो कम नहीं है। बाबा को जो काम जिससे कराना होता है, जब कराना होता है तब ऐसी आत्माओं में ऐसी भावनायें भर देता है, शक्तियां भर देता है। सिर्फ इसमें हमको निमित्त बनना है। बाकी कमाल तो बाबा की ही है, व्यक्त में तो कमाल दिखाई स्थापना की। लेकिन अव्यक्त में भी बाबा कमाल कर रहा है जो सबको सम्पूर्ण बनाकर साथ ले ही जायेगा। तो क्यों नहीं हम प्यार से तैयार हो जायें, सजायें खाकर क्यों जायें। पुरूषार्थ भी बहुत सहज है क्योंकि इस समय हमको दो बाप हैं। एक शिवबाबा समान विदेही बनना है, न्यारा बनना है, आत्मा बनना है। और कर्म में ब्रह्मा बाबा को फॉलो करना है। कोई भी काम शुरू करने से पहले ब्रह्मा बाबा को सामने लाओ। ब्रह्मा बाबा ने कैसे किया? बाबा की वृत्ति क्या? बाबा की दृष्टि क्या? बाबा कैसे कर्म करता है? यह सब मुरलियों में स्पष्ट बताता है। तो ब्रह्मा बाबा को सामने रखो, उसको फॉलो करो। जैसे बाबा ने किया है, मुझे भी वैसा ही करना है। नई कोई मत नहीं चलानी है, नया कोई काम नहीं करना है। बस। सिर्फ फॉलो ही करना है। कदम पर कदम रखना है और कोई रास्ता नहीं ढूँढना है, यह तो बहुत इज़ी है। बाबा मंजिल पर पहुँच गया, अव्यक्त हो गया माना रास्ता राइट है तभी तो मंजिल पर पहुंचा। तो हम भी पहुँचेंगे जरूर लेकिन फॉलो फादर करेंगे तब। उनके कदम पर कदम उठा रहे हैं तो जरूर पहुँचेंगे, सहज पुरूषार्थ है। बाकी इतना बैठकर मेहनत करना, माया क्यों आयी, कैसे आयी.. ऐसे सोचना यह भी

उसको और ही चाय पानी पिलाना है। और जिसको चाय पानी पिलायेंगे वह बैठेगी या जायेगी? फिर मेहनत करो, योद्धे बनो इसलिए उसको बिठाओ ही नहीं, तो मायाजीत सहज हो जायेंगे। अब सहज पुरूषार्थ में रहो, संस्कार में भी इज़ी रहो। संस्कार और पुरूषार्थ में इज़ी माना हंसी-मजाक वाला नहीं। इज़ी माना जैसा समय वैसे हम अपने को मोल्ड कर सकें, इसको कहते हैं इजी नेचर। इजी नेचर माना हर परिस्थिति में एडजेस्ट करने की ताकत होनी चाहिए और जैसा समय उसी अनुसार अपने को मोल्ड कर दें। एडजेस्ट करके अपने को न्यारा करके चलो। उस बात को पकड़ करके रुको नहीं, यह क्यों हुआ? यह क्या हुआ? ऐसा होना थोड़ेही चाहिए! यह मर्यादा नहीं है! यह बड़े क्यों करते हैं, छोटे क्यों करते हैं, अरे आप उसके जिम्मेवार हो क्या? इसमें फायदा कुछ भी नहीं। पानी बिलोर करके बैठ जायेंगे फिर भी अपने को ही ठीक करना पड़ेगा इसलिए ऐसा पानी बिलोरते ही क्यों? दर्द तो हमारे ही हाथों में होगा। दूसरे को थोड़ेही दर्द होगा। तो ऐसी अवस्था इजी हो माना अपने को मोल्ड कर लो। अगर कोई बात है तो ऊपर दे दिया बस, खत्म। बाकी सोच नहीं चलाओ। नहीं तो ऐसी व्यर्थ संकल्पों की आदत पड़ जायेगी जो उससे छूटना बहुत मुश्किल हो जायेगा। फिर टाइम वेस्ट, एनर्जी वेस्ट, सब वेस्ट इसलिए अभी समय को बचाओ, संकल्पों को बचाओ। और शक्तियों तथा गुणों को बचाओ, जमा करो।

अमृतवेले एकदम ऐसे फुर्त अच्छे होकर बैठो तो दो चार दिन में भी आपको इतने अच्छे अनुभव होंगे जो ट्रान्स तो उसके आगे कुछ भी नहीं है क्योंकि हमको तो दोनों अनुभव हैं। ट्रान्स टेम्प्रेरी टाइम का होता है और अनुभव सदाकाल का होता है। उस अनुभव को कभी भी याद करेंगे तो उसमें ही खो जायेंगे। ट्रान्स का संकल्प नहीं करो क्योंकि संकल्प करने वाला तो ट्रांन्स में जा ही नहीं सकता है, नीचे आ जायेगा क्योंकि इस संकल्प का भी बोझ तो है। इसमें तो न्यारा होना पड़ता है।

आपको कोई भी टाइम कैसी भी माया आवे वह सेकेण्ड का किया हुआ अनुभव जो होता है वह इतना पावरफुल होता है, कोई भी बात आपके सामने आये, उस अनुभव को याद करो तो वह बात खत्म हो जायेगी। सबसे बड़ी अथॉरिटी अनुभव की है। सबसे बड़ा प्रमाण भी अनुभव का ही होता है। तो अनुभव करके देखो। इसके लिए पहले सारा दिन मालिक होकर कर्म कराने का अभ्यास करो फिर योग में बैठो तो ट्रान्स से भी ऊपर चले जायेंगे। ट्रान्स में अपनी मेहनत नहीं होती है, यह तो ड्रामा की नूंध अनुसार किसी-किसी को ही वरदान प्राप्त होता है। हम समझे हम ट्रान्स में जाते हैं। अन्त समय में भी ट्रान्स में चले जायेंगे, लेकिन अन्त में बाबा कभी नहीं बुलायेगा। कहेगा योग का प्रमाण दो क्योंकि ट्रान्स तो बाबा की मदद है और यह अपना अनुभव है, अपनी ताकत है। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

सच के अन्दर कभी कोई आंच न आये तो स्थिति ऊंची बन जायेगी

बाबा कहते बच्चे सदा आज्ञाकारी बनो। आज्ञाकारी अर्थात् हाँ जी, यही हमारा साइन है। जो यहाँ हाँ जी, हाँ जी करेंगे उनकी वहाँ हाँ जी, हाँ जी होगी। हाँ जी करने वाले कभी डगमग नहीं हो सकते। क्यों, क्या, कैसे... इन प्रश्नों में वे अपना माथा गर्म नहीं करेंगे। उनका दिमाग शीतल कुण्ड होगा क्योंकि हाँ जी का पाठ गर्मी निकाल देता है। शीतल काया वाले योगी बन जाते हैं।

मेरे दिल में सबके लिए रिस्पेक्ट हो। रिस्पेक्ट वही रख सकते जिनके अन्दर शुभ भावना है। अगर अनुमान और नफ़रत होगी तो प्यार भी गंवायेंगे, मान भी गंवायेंगे। युनिटी भी नहीं रह सकेगी। भल तुम्हें गिराने लिए कोई ने गड्ढा खोदा हो, लेकिन अगर तुम सच्चे हो, तुम्हारे दिल में उसके प्रति शुभ भावना है तो बाबा तुम्हारी रक्षा जरूर करेगा। तुम्हें बचा लेगा। अन्दर में कभी भी अशुभ भाव न हो। ऐसे नहीं सोचो – देखना यह मेरे लिए ऐसा करता, धर्मराज बाबा इसे कितना दण्ड देंगे। मैं कोई श्राप देने वाला दुर्वासा नहीं हूँ। मैं क्यों कहूँ यह मुझे तंग करता – देखना इसकी क्या गति होगी! मैं क्यों बुरा सोचूं! अगर मैने अशुभ सोचा तो मुझे उसका 100 गुणा दण्ड मिलेगा क्योंकि मैं दुर्वासा बनी। राजयोगी दुर्वासा नहीं बन सकते। आप अपनी ऐसी स्थिति रखो तो कभी इन्द्रियों की चंचलता आयेगी ही नहीं। तुम बाबा को मनाओ तो आपेही सब मान जायेंगे। कई हैं जो भावना रखते सर्विस की और करते हैं डिससर्विस। आपस में नहीं बनती तो लड़ पड़ते। कहेंगे मुझे मान नहीं मिलता, उसे मिलता मुझे क्यों नहीं मिलता।

हमें बाबा ने श्रीमत दी है - बच्चे क्षीरखण्ड होकर रहो। स्वप्न में भी लूनपानी (खारा-पानी) नहीं होना। मैं क्षीरखण्ड वाली लूनपानी क्यों होती! अगर लूनपानी होते तो ब्रह्माकुमार कुमारी कहला नहीं सकते। मेरा काम है दूध-चीनी होकर रहना। अगर मेरे में नमक होगा तो दूसरे भी मेरे ऊपर नमक डालेंगे। लूनपानी होने का मुख्य कारण है देह-अभिमान। अगर मैं इस दुश्मन से किनारा कर क्षीरखण्ड रहूँ तो कोई भी बात मेरे सामने आयेगी ही नहीं। आयेगी तो हवा की तरह चली जायेगी। सदा क्षीरखण्ड रहो माना एकता में, युनिटी में रहो।

पढ़ाई छोड़ना माना लूला लंगड़ा बनना। मुरली में बाबा ने जो भी श्रीमत दी है उसे पालन करना मेरा स्वधर्म है। चेक करो मेरे में श्रीमत पालन करने की कितनी शक्ति है? मेरा सारा व्यवहार श्रीमत के अन्दर है? मुझे श्रीमत है - तुम देहधारी की आकर्षण में नहीं जाओ। अगर आकर्षण होती तो वह श्रीमत की लकीर छोड़ता। उन्हें रावण जरूर अपनी शोकवाटिका में ले जायेगा। हमें श्रीमत है तुम अपना तन-मन-धन, बाबा की सेवा में लगाओ। अपनी दिनचर्या को श्रीमत के अनुसार चेक करो।

ईर्ष्या के वश कभी भी किसी को गिराने का ख्याल नहीं करो। अगर स्वयं को चढ़ाने का संकल्प और दूसरे को गिराने का संकल्प है तो यह बहुत बड़ा पाप है।

भक्ति में कहते हैं हृदय में भगवान बैठा है। यह हृदय हमारे बाबा का घर है। जिनके हृदय में प्रेम है, उनके हृदय में बाबा की याद है। जिनके हृदय में बाबा है, उनके हृदय में बाबा के सब रत्न हैं। बाबा के सब फूल हैं। अगर कहते यह मेरा स्टूडेन्ट.... बाबा कहता मेरा कहना भी बहुत बड़ा पाप है। सब बाबा के स्टूडेन्ट हैं। बाबा के कहने पर चल रहे हैं फिर तुम क्यों कहती – यह मेरा स्टूडेन्ट तुम्हारे सेन्टर पर नहीं जा सकता। मैं तो कहती जो ऐसा सोचते वह बहुत बड़ा पाप करते हैं। चुम्बक हमारा बाबा है, चलाने वाला बाबा है। बाबा के सब प्यारे बच्चे हैं। बेहद की भावना रखो। हदों में नहीं आओ। मैं और मेरेपन की हदें बहुत नुकसान करती हैं, अब इन हदों से बाहर निकलो। जैसे बाबा बेहद का है, ऐसे बेहद दिल वाले बनो। अच्छा - ओम् शान्ति।

वरिष्ठ भाईयों की भट्ठी में चली हुई वर्कशाप (कार्यशाला)
टॉपिक - विस्तार को सार स्वरूप में लाने का अभ्यास

1. विस्तार है - देह अभिमान, इससे समय शक्ति संकल्प नष्ट होते हैं।
2. विस्तार है - ज्ञान, जो सागर के समान है।
3. विस्तार है - सेवाओं का
4. विस्तार है - दूसरों को राय देना
5. विस्तार है - विश्व परिवर्तन
6. विस्तार है - बाह्यमुखता
6. विस्तार है - आरोप, अभिमान, अपमान
8. विस्तार है - ज्ञान का मनन चिंतन
9. विस्तार है - समस्या स्वरूप बनना
10. विस्तार है - झाड़
11. विस्तार है - 5 हजार वर्ष का ड्रामा
12. विस्तार है - एटॉमिक एनर्जी

1. सार है - आत्म अभिमानी स्थिति, इससे संकल्प समय शक्ति सफल होते हैं।
2. सार है - उस ज्ञान का स्वरूप बनना।
3. सार है - साइलेन्स में रहना।
4. सार है खुद को राय देना।
5. सार है स्व परिवर्तन
6. सार है अन्तर्मुखता
7. सार है - क्षमा करना कल्याण करना।
8. सार है अतिन्द्रिय सुख, आनंद स्वरूप स्थिति में रहना।
9. सार है समाधान स्वरूप रहना।
10. सार है बीज
11. सार है फुलस्टाप
12. सार है शान्ति की शक्ति

ज्ञान का मुख्य सार - 1- तीन बिन्दु की स्मृति। करनकरावनहार बाबा। बालक सो मालिक पन का बैलेन्स।

ज्ञान सागर के ज्ञान का विस्तार तो इतना है जो कहते हैं, सागर को स्याही बनाओ, जंगल को कलम बनाओ, स्वयं सरस्वती लिखने के लिए बैठे तो भी ज्ञान पूरा नहीं हो सकता। लेकिन पूरे ज्ञान का सार है बिन्दी।

मैं आत्मा बिन्दी हूँ, मेरा बाबा बिन्दी है और इस ड्रामा में जो बीता वह बिन्दी। इससे स्थिति एकरस रहती है। हलचल समाप्त हो जाती है। स्वयं को आत्मा टेन्शनमुक्त अनुभव करती है। सदा हर्षित रहती है। किसी बात में उलझती नहीं है। बुद्धि समय पर ठीक निर्णय कर लेती है। बाबा की यथार्थ टचिंग आती है। समय पर उसे कैच कर सकते हैं इससे सदा सेफ और निश्चित रहते हैं।